ॐ श्री कृष्ण शरणं मम ॐ
卐 कर्मयोग नामक तीसरा अध्याय 卐

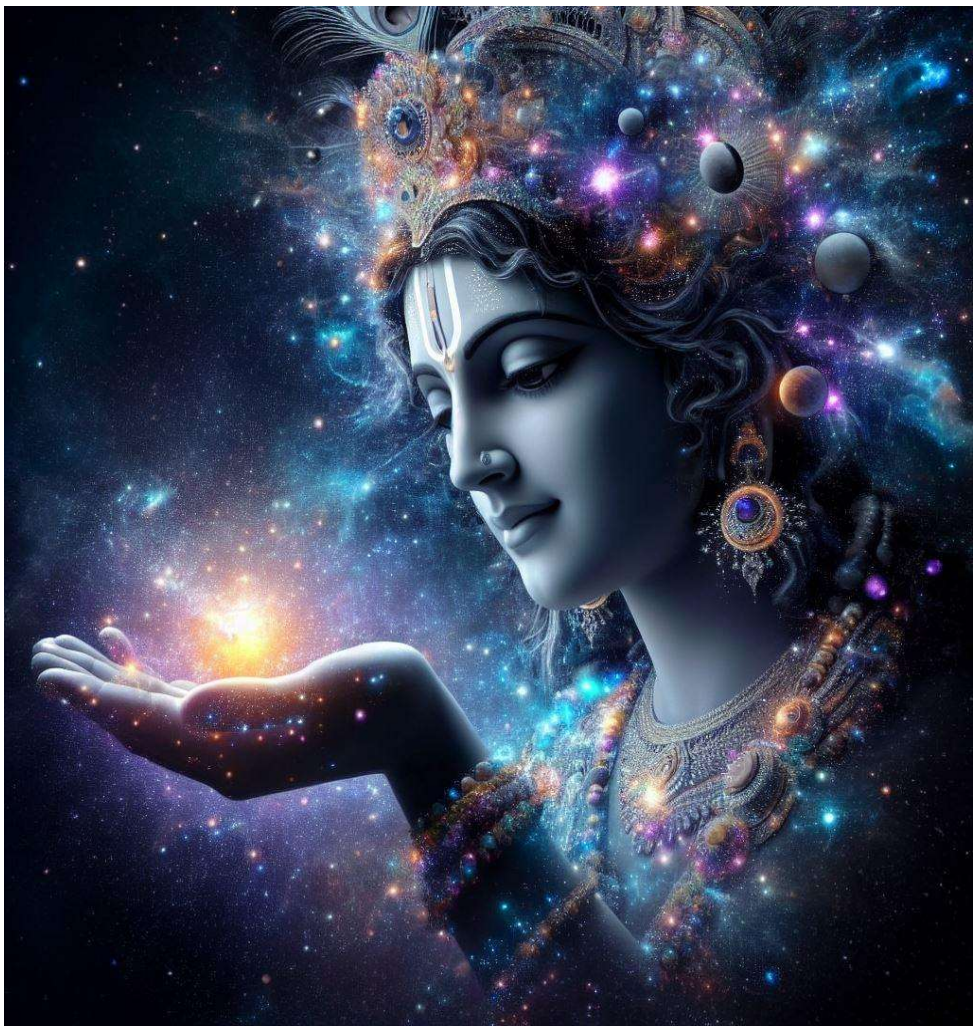

ठाकुर भिम सिंह द्वारा प्रस्तुत
श्रीमद्भगवद्गीता अमृत
श्लोकों के गूढ़ रहस्यों के साथ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

कर्मयोग- नामक तीसरा अध्याय

01-08	ज्ञानयोग और कर्मयोग के अनुसार अनासक्त भाव से नियत कर्म करने की श्रेष्ठता का निरूपण
09-16	यज्ञादि कर्मों की आवश्यकता का निरूपण
17-24	ज्ञानवान और भगवान के लिए भी लोकसंग्रहार्थ कर्मों की आवश्यकता
25-35	अज्ञानी और ज्ञानवान के लक्षण तथा राग-द्वेष से रहित होकर कर्म करने के लिए प्रेरणा
36-43	काम के **निरोध** • बाधा या घेरा – का विषय

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

अर्जुन उवाच :

ज्यायसी चेत् कर्मणस् ते मता बुद्धिर् जनार्दन ।
तत् किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव ॥१॥
व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे ।
तद् एकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहम् आप्नुयाम् ॥२॥

अर्जुन बोले— हे जनार्दन, यदि आप कर्म से ज्ञान को श्रेष्ठ मानते हैं, तो फिर, हे केशव, आप मुझे इस भयंकर कर्म में क्यों लगा रहे हैं? आप मिश्रित वचनों से मेरी बुद्धि को भ्रमित कर रहे हैं. अतः आप उस एक बात को निश्चित रूप से कहिए, जिससे मेरा कल्याण हो. (३.०१-०२)

BG 3.1-2: Arjun said: O Janardan, if You consider knowledge superior to action, then why do You ask me to wage this terrible war? My intellect is bewildered by Your ambiguous advice. Please tell me decisively the one path by which I may attain the highest good.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्रीभगवानुवाच :

लोकेऽस्मिन् द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयाऽनघ ।
ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम् ॥३॥

श्रीभगवान बोले— हे निष्पाप अर्जुन, इस लोक में दो प्रकार की निष्ठा (स्थिति) मेरे द्वारा पहले कही गयी है. जिनकी रुचि ज्ञान में लगती है, उनकी निष्ठा ज्ञानयोग से (अर्थात् जीवात्मा की प्रधानता) और कर्म में रुचि वालों की निष्ठा कर्मयोग से (अर्थात् संसार की प्रधानता समझना) होती है. (३.०३)

BG 3.3: The Lord said: O sinless one, the two paths leading to enlightenment were previously explained by Me: the path of knowledge, for those inclined toward contemplation, and the path of work for those inclined toward action.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

न कर्मणाम् अनारम्भान् नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते ।
न च संन्यसनाद् एव सिद्धिं समधिगच्छति ॥४॥

मनुष्य कर्म का त्यागकर कर्म के बन्धनों से मुक्त नहीं होता. केवल कर्म के त्याग मात्र से ही सिद्धि की प्राप्ति नहीं होती. (३.०४).

BG 3.4: One cannot achieve freedom from karmic reactions by merely abstaining from work, nor can one attain perfection of knowledge by mere physical renunciation.

श्रीमद्भगवद्गीता मनुष्य को व्यवहार में परमार्थ सिद्धि की कला सिखाती है । उस का आशय कर्म कराने में है, छुड़ाने में नहीं । विषेशता, भगवान् कर्मों में जो जहरीला अंश अर्थात कामना, ममता और आसक्ति है, उस का त्याग कर के ही कर्म करने की अज्ञा देते हैं ।

Bhagvat Gita teaches selfless actions in everyday life of a Human Being for the benefit of all living beings. And this is dependent on taking actions and not foregoing them. In particular the Lord Krishna is expecting humans to remove the evil and the poisonous aspects (such as desire, attachment, passion etc) from their actions.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

न हि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्य् अकर्मकृत् ।
कार्यते ह्य् अवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर् गुणैः ॥५॥

कोई भी मनुष्य एक क्षण भी बिना कर्म किए नहीं रह सकता, क्योंकि प्रकृति के गुणों द्वारा मनुष्यों से — परवश की तरह — सभी कर्म करवा लिए जाते हैं. (३.०५)

BG 3.5: There is no one who can remain without action even for a moment. Indeed, all beings are compelled to act by their qualities born of material nature (the three *guṇas*).

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन् ।
इन्द्रियार्थान् विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ॥६॥

जो मूढ़ बुद्धि मनुष्य इन्द्रियों को (प्रदर्शन के लिए (acting only) रोककर मन द्वारा विषयों का चिन्तन करता रहता है, वह मिथ्याचारी कहा जाता है. (३.०६). ऐसे व्यक्ति को कोई लाभ नहीं होता ।

BG 3.6: **Those who restrain the external organs of action, while continuing to dwell on sense objects in the mind, certainly delude themselves and are to be called hypocrites.**

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

यस् त्व् इन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन ।
कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगम् असक्तः स विशिष्यते ॥७॥

परन्तु हे अर्जुन, जो मनुष्य बुद्धि द्वारा अपने इन्द्रियों को वश में करके, अनासक्त (unattached) होकर कर्मेन्द्रियों द्वारा निष्काम कर्मयोग का आचरण करता है, वही श्रेष्ठ है. (३.०७)

विशेष बात : निष्काम कर्मयोग जो बिना किसी फल की इच्छा से किया जाता है । जो शास्त्रों में अनुकूल और कर्तव्य कर्म बातायें गये हैं, जो संसार के हित के लिये किये जायें, जिस में सर्वप्राणिमात्र का कल्याण हो, क्या मनुष्य, क्या पशु-पक्षि और क्या लतावृक्ष आदि ।

BG 3.7: But those karm yogis who control their knowledge senses with the mind, O Arjun, and engage the working senses in working without attachment, are certainly superior.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्य् अकर्मणः ।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्धयेद् अकर्मणः ॥८॥

तुम अपने कर्तव्य का पालन करो, क्योंकि कर्म न करने से कर्म करना श्रेष्ठ है तथा कर्म न करने से तेरे शरीर का निर्वाह भी नहीं होगा. (३.०८)

BG 3.8: You should thus perform your prescribed Vedic duties, since action is superior to inaction. By ceasing activity, even your bodily maintenance will not be possible.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

यज्ञार्थात् कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः ।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर ॥९॥

केवल अपने लिए कर्म करने से मनुष्य कर्म बन्धन से बन्ध जाता है; इसलिए हे अर्जुन, कर्मफल

की आसक्ति त्यागकर सेवाभाव से भलीभांति अपना कर्तव्य कर्म का पालन करो. (३.०९).
यज्ञ शब्द के अन्तर्गत, यज्ञ, दान, तप, होम, तीर्थ-सेवन, व्रत, वेदाध्ययन, आदि समस्त शारीरिक,व्यावहारिक और पारमार्तिक क्रियाएँ आ जाती हैं ।

BG 3.9: Work must be done as a yajna to the Supreme Lord; otherwise, work causes bondage in this material world. Therefore, O son of Kunti, for the satisfaction of God, perform your prescribed duties, without being attached to the results.
According to the Gita, every duty is Yagna (sacrifice). The term Yagna includes sacrifice, charity, penance, oblation, pilgrimage, fasting, study of the scriptures and all physical, mundane and spiritual actions.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ग्रहियज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः ।
अनेन प्रसविष्यध्वम् एष वोऽस्त्व् इष्टकामधुक् ॥१०॥

सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने सृष्टि के आदि में **यज्ञ** (अर्थात् निस्वार्थ सेवा) के साथ प्रजा का निर्माणकर कहा— "इस यज्ञ द्वारा तुम लोग वृद्धि प्राप्त करो और यह यज्ञ तुम लोगों को इष्टफल देने वाला हो." (३.१०)

BG 3.10: In the beginning of creation, Brahma created humankind along with duties, and said, “Prosper in the performance of these *yajñas* (sacrifices), for they shall bestow upon you all you wish to achieve.”

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः ।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परम् अवाप्स्यथ ॥११॥

तुम लोग यज्ञ के द्वारा देवताओं को उन्नत करो और देवगण तुम लोगों को उन्नत करें. इस प्रकार एक दूसरे को उन्नत करते हुए तुम परम कल्याण को प्राप्त होगे. (३.११)

मार्मिक बातः

सृष्टि रचने के समय प्रजापति ब्रह्माजी ने कर्तव्य कर्मो की योग्यता और विवेक सहित मनुष्यों की रचना की है । इसलिये मनुष्य को अपने कर्तव्य कर्मों का पालन करते हुये उन यज्ञों को करना उचित है जिन से समाज को अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थियों से उचित लाभ हो । जैसे प्रयाप्त वर्षा के लिये । देवता, ऋषि,पितर, मनुष्य, पशु, पक्षीादि सभी प्रजा हैं, अतः इन सब के हित के लिये उन सब यज्ञों को करे जो शास्त्रों में निर्धारित किये गये हैं ।

BG 3.11: By your sacrifices, the celestial gods will be pleased, and by cooperation between humans and the celestial gods, great prosperity will reign for all.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

इष्टान् भोगान् हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः ।
तैर् दत्तान् अप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः ॥१२॥

यज्ञ द्वारा पोषित देवगण तुम्हें इष्टफल प्रदान करेंगे. देवताओं के द्वारा दिए हुए भोगों को जो मनुष्य उन्हें बिना दिए अकेला सेवन करता है, वह निश्चय ही चोर है. (३.१२)

मार्मिक बातः

देवताओं के भाग का अर्थ यहाँ पर यह है "कि निशकाम भाव से सब की सेवा करना । ये शरीर हमें माता-पिता से मिला है, विद्या गुरूजनों से, ज्ञान ऋषि-मुनि से, पशु-पक्षी, वृक्ष, लता अनाज, औशद्धि आदि अज्ञान से दूसरों के सुख के निमित स्वयं को समर्पित कर देते हैं । इस प्रकार हमारे पास जो कुछ सामग्री (बल, योगता, पद, अधिकार, धन, सम्पति आदि) है, वह सब के सब हमें दूसरों से हीं मला है । इसलिये इनको दूसरों की सेवा में लगा देना चाहिये ।

BG 3.12: The celestial gods, being satisfied by the performance of sacrifice, will grant you all the desired necessities of life. But those who enjoy what is given to them, without making offerings in return, are verily thieves.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः ।
भुञ्जते ते त्व् अघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥१३॥

यज्ञ से बचे हुए अन्न (अर्थात् दूसरों की सेवा के बाद जो कुछ बच जाये) को खाने वाले श्रेष्ठ मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाते हैं; परन्तु जो लोग केवल अपने लिए ही अन्न उगाते हैं, वे पाप के भागी होते हैं. (ऋ.वे. १०.११७.०६ भी देखें) (३.१३)

BG 3.13: The spiritually-minded, who eat food that is first offered in sacrifice, are released from all kinds of sin. Others, who cook food for their own enjoyment, verily eat only sin.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्याद् अन्नसंभवः ।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥१४॥
कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् ।
तस्मात् सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् ॥१५॥

समस्त प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं, अन्न वृष्टि से होता है, वृष्टि यज्ञ से होती है, यज्ञ कर्म से, कर्म वेदों में विहित है और वेद को अविनाशी ब्रह्म से उत्पन्न हुआ जानो. इस तरह सर्वव्यापी ब्रह्म सदा ही यज्ञ (अर्थात् सेवा) में प्रतिष्ठित है. (४.३२ भी देखें) (३.१४-१५) – रामचरित्रमानस के माध्यम सेः "सपतम सब मोहिमय जग देखे" ।

BG 3.14-15: All living beings subsist on food, and food is produced by rains. Rains come from the performance of sacrifice, and sacrifice is produced by the performance of prescribed duties.
The duties for human beings are described in the Vedas, and the Vedas are manifested by God Himself. Therefore, the all-pervading Lord is eternally present in acts of sacrifice.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः ।
अघायुर् इन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति ॥१६॥

हे पार्थ, जो मनुष्य सेवा द्वारा इस सृष्टिचक्र को चलते रहने में सहयोग नहीं देता है, वैसा पापमय, भोगी मनुष्य व्यर्थ ही जीता है. (३.१६)

BG 3.16: O Parth, those who do not accept their responsibility in the cycle of sacrifice established by the Vedas are sinful. They live only for the delight of their senses; indeed their lives are in vain.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

यस् त्वात्मरतिर् एव स्याद् आत्मतृप्तश्च मानवः ।
आत्मन्येव च संतुष्टस् तस्य कार्यं न विद्यते ॥१७॥

परन्तु जो मनुष्य परमात्मा में ही रमण करता है (अर्थात् सभी प्राणीमात्र में उन्हीं को देखता है) तथा परमात्मा में ही तृप्त और संतुष्ट रहता है, (अर्थात् सब की सेवा में अपना सुख समझता है) वैसे आत्मज्ञानी मनुष्य के लिए कोई कर्तव्य शेष नहीं रहता. (३.१७) . यही एक सच्चे कर्मयोगी की निशानी है ।

BG 3.17: But those who rejoice in the self, who are illumined and fully satisfied in the self, for them, there is no duty.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन ।
न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिद् अर्थव्यपाश्रयः ॥१८॥

उसे कर्म करने से या न करने से कोई प्रयोजन नहीं रहता तथा वह (परमात्मा के अलावा) किसी और प्राणी पर आश्रित नहीं रहता. (३.१८)

BG 3.18: Such self-realized souls have nothing to gain or lose either in discharging or renouncing their duties. Nor do they need to depend on other living beings to fulfill their self-interest.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

तस्माद् असक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर ।
असक्तो ह्याचरन् कर्म परम् आप्नोति पूरुषः ॥१९॥

इसलिए तुम अनासक्त होकर सदा अपने कर्तव्य कर्म का भलीभांति पालन करो, क्योंकि अनासक्त (without any attachments, desire or wants) रहकर कर्म करने से ही मनुष्य परमात्मा को प्राप्त करता है. (३.१९) .
संसारिक वस्तुओं में आस्तक हुआ व्यक्ति कभी भी सुखी नहीं रहता क्योंकि उस की इच्छा कभी मिटती ही नहीं अपितु बड़ती ही है । फिर इच्छा पूर्ण न होने से क्रोध पैदा होता है जो मनुष्य को जीवन-मृत्यु के चक्कर में बाँधता है ।

BG 3.19: Therefore, giving up attachment, perform actions as a matter of duty because by working without being attached to the fruits, one attains the Supreme.

Commentary:
From verses 3.8 to 3.16, Shree Krishna strongly urged those who have not yet reached the transcendental platform to perform their prescribed duties. In verses 3.17 and 3.18, he stated that the transcendentalist is not obliged to perform prescribed duties. So, what path is more suitable for Arjun? Shree Krishna's recommendation for him is to be a *karm yogi*, and not take *karm sanyās*. *He explains the reason for this in verses 3.20 to 3.26.*

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

कर्मणैव हि संसिद्धिम् आस्थिता जनकादयः ।
लोकसंग्रहमेवापि संपश्यन् कर्तुम् अर्हसि ॥२०॥
यद् यद् आचरति श्रेष्ठस् तत् तद् एवेतरो जनः ।
स यत् प्रमाणं कुरुते लोकस् तद् अनुवर्तते ॥२१॥

राजा जनक आदि ज्ञानीजन निष्काम कर्मयोग द्वारा परम सिद्धि को प्राप्त हुए थे. लोक कल्याण के लिए भी तुम्हारा कर्म करना ही उचित है. (३.२०).

श्रेष्ठ मनुष्य जैसा आचरण करता है, दूसरे लोग भी वैसा ही आचरण करते हैं. वह जो प्रमाण देता है, जन समुदाय उसी का अनुसरण करते हैं. (३.२१)

सूर्यदेव, उन के पुत्र वैबस्वतमनु जिन का पुत्र ईच्छ्वाकू, आदि, फिर जनक आदि, सबने निश्काम कर्मयोग का ही आशय ले कर निश्काम कर्मयोगी हुये हैं । यह सब हमारे लिये उदाहरण है ।

BG 3.20-21: By performing their prescribed duties, King Janak and others attained perfection. You should also perform your duties to set an example for the good of the world. Whatever actions great persons perform, common people follow. Whatever standards they set, all the world pursues.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किंचन ।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि ॥२२॥

हे पार्थ, तीनों लोकों में न तो मेरा कोई कर्तव्य है और न कोई भी प्राप्त करने योग्य वस्तु मुझे अप्राप्त है, फिर भी मैं कर्म करता हूं. (३.२२)

भगवान् के कर्म हैं सृष्टि रचना, औतार धारण कर के अधर्मियों का नाश और धर्म की रक्षा करना आदि । इसी तराह मनुष्य के लिये भी कोई कर्म करने योग नही है अगर वह निशकामी हो जाता है पर भगवान् की तराह उसे भी लोक कल्यान के निमित कर्म करना ही श्रेष्ठ माना जाता है । निशकाम कर्म करते करते वह समये भी आ जाता है जब वही मनुष्य एक ऐसी स्थिति में पहुँच जाता है जहाँ कर्म न करने से उसे कोई बाधा नहीं होती ।

BG 3.22: There is no duty for Me to do in all the three worlds, O Parth, nor do I have anything to gain or attain. Yet, I am engaged in prescribed duties.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः ।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥२३॥
उत्सीदेयुर् इमे लोका न कुर्यां कर्म चेद् अहम् ।
संकरस्य च कर्ता स्याम् उपहन्याम् इमाः प्रजाः ॥२४॥

क्योंकि यदि मैं सावधान होकर कर्म न करूं तो हे पार्थ, मनुष्य मेरे ही मार्ग का अनुसरण करेंगे. इसलिए यदि मैं कर्म न करूं, तो ये सब लोक नष्ट हो जायेंगे और मैं ही इनके विनाश का तथा अराजकता का कारण बनूंगा. (३.२३-२४).

BG 3.23: For if I did not carefully perform the prescribed duties, O Parth, all men would follow My path in all respects.

BG 3.24: If I ceased to perform prescribed actions, all these worlds would perish. I would be responsible for the pandemonium that would prevail, and would thereby destroy the peace of the human race.

भगवान के इन बचनों से ये संकेत मिलता है कि अगर सभी मनुष्य स्वार्थी हो जायें और केवल अपने लिये ही कर्म करें, तो निश्चित इस संसार का बिनाश हो जायेगा । निश्कामता न होने के कारण देवताओं का भाग उन्हें न प्राप्त होने से देवता निर्बल

हो जायेंगे जिस से वे संसार के प्रति अपना दायित्व निभाने में सक्षम नही होंगे। अगर आप अनुमान लगा सको कि वायुदेव, सूर्यदेव, अगनीदेव आदि अपने अपने दायित्व को निभाने में सक्षम न रह पायें तो मनुष्य ही नहीं, अपितु इस मृत्यु लोक के सभी प्राणी के प्राण संकट में हो जायेगें। आप सब को तो ज्ञात ही होगा की देवता मनुष्यों की तरह अन्न-जल का सेवन से नहीं अपितु मनुष्यों के यज्ञ द्वारा अर्पन की गई भाग से ही पोशित होतें हैं। इसीलिये श्रीकृष्ण भगवान ने यहाँ पर इस श्लोक को हम सब के शिक्षा के निमित कहना आवश्यक समझा।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

सक्ताः कर्मण्य् अविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत।
कुर्याद् विद्वांस् तथासक्तश् चिकीर्षुर् लोकसंग्रहम् ॥२५॥

हे भारत, अज्ञानी लोग जिस प्रकार कर्मफल में आसक्त होकर भलीभांति अपना कर्म करते हैं, उसी प्रकार ज्ञानी मनुष्य भी जनकल्याण हेतु आसक्तिरहित होकर भलीभांति अपना कर्म करें. (३.२५)

BG 3.25: As ignorant people perform their duties with attachment to the results, O scion of Bharat, so should the wise act without attachment, for the sake of leading people on the right path.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

न बुद्धिभेदं जनयेद् अज्ञानां कर्मसङ्गिनाम्।
जोषयेत् सर्वकर्माणि विद्वान् युक्तः समाचरन् ॥२६॥

ज्ञानी कर्मफल में आसक्त अज्ञानियों की बुद्धि में भ्रम अर्थात् कर्मों में अश्रद्धा उत्पन्न न करे तथा स्वयं (अनासक्त होकर) समस्त कर्मों को भलीभांति करता हुआ दूसरों को भी वैसा ही करने की प्रेरणा दे. (३.२६ भी देखें) (३.२६) .

इस से पूर्व वाले श्लोक में भगवान् ये दरशाते हैं कि कर्मफल में आसक्त हुये लोगों को कर्म करने से उन्हें रोके नहीं अपतु उन में केवल आसक्ति का आभाव पैदा करने की कोशिश करें और धीरे-धीरे निश्कामता की ओर ले जाने की चेष्टा करें।

BG 3.26: The wise should not create discord in the intellects of ignorant people, who are attached to fruitive actions, by inducing them to stop work. Rather, by performing their duties in an enlightened manner,
they should inspire the ignorant also to do their prescribed duties.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः।
अहंकारविमूढात्मा कर्ताहम् इति मन्यते ॥२७॥

वास्तव में संसार के सारे कार्य प्रकृति मां के गुणरूपी परमेश्वर की शक्ति के द्वारा ही किए जाते हैं, परन्तु अज्ञानवश मनुष्य अपने आपको ही कर्ता समझ लेता है (तथा कर्मफल की आसक्तिरूपी बन्धनों से बन्ध जाता है. मनुष्य तो परम शक्ति के हाथ की केवल एक कठपुतली मात्र है). (५.०६, १३.२६, १४.१६ भी देखें) (३.२७)

BG 3.27: All activities are carried out by the three modes of material nature. But in ignorance, the soul, deluded by false identification with the body, thinks of itself as the doer.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

तत्त्ववित् तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः ।
गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते ॥२८॥

परन्तु हे महाबाहो, गुण और कर्म के रहस्य को जानने वाले ज्ञानी मनुष्य ऐसा समझकर — कि (इन्द्रियों द्वारा) प्रकृति के गुण ही सारे कर्म करते हैं (तथा मनुष्य कुछ भी नहीं करता है) — कर्म में आसक्त नहीं होते. (३.२८)

BG 3.28: O mighty-armed Arjun, illumined persons distinguish the soul as distinct from *guṇas* and karmas. They perceive that it is only the *guṇas* (in the shape of the senses, mind, and others) that move among the *guṇas* (in the shape of the objects of perception), and thus they do not get entangled in them.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

प्रकृतेर् गुणसंमूढाः सज्जन्ते गुणकर्मसु ।
तान् अकृत्स्नविदो मन्दान् कृत्स्नविन् न विचालयेत् ॥२९॥

प्रकृति के गुणों द्वारा मोहित होकर अज्ञानी मनुष्य गुणों के (द्वारा किए गये) कर्मों में आसक्त रहते हैं और सकाम भाव से बहुत से शुभ कर्म करते है, उन्हें ज्ञानी मनुष्य उन के सकाम कर्ममार्ग से विचलित न करें. (३.२६ भी देखें) (३.२९)

BG 3.29: Those who are deluded by the operation of the *guṇas* become attached to the results of their actions. But the wise who understand these truths should not unsettle such ignorant people who know very little.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा ।
निराशीर् निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः ॥३०॥

मुझ में चित्त लगाकर, सम्पूर्ण कर्मों (के फल) को मुझ में अर्पण करके, आशा, ममता और संतापरहित होकर अपना कर्तव्य (युद्ध) करो. (३.३०)

BG 3.30: Performing all works as an offering unto Me, constantly meditate on Me as the Supreme. Become free from desire and selfishness, and with your mental grief departed, take the battlefield and fight!

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ये मे मतम् इदं नित्यम् अनुतिष्ठन्ति मानवाः ।
श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः ॥३१॥
ये त्वेतद् अभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम् ।
सर्वज्ञानविमूढांस् तान् विद्धि नष्टान् अचेतसः ॥३२॥

जो मनुष्य बिना आलोचना किये, श्रद्धा पूर्वक मेरे इस उपदेश का सदा पालन करते हैं, वे कर्मों के बन्धन से मुक्त हो जाते हैं; परन्तु जो आलोचक मेरे इस उपदेश का पालन नहीं करते, उन्हें अज्ञानी, विवेकहीन तथा खोया हुआ समझना चाहिए. (३.३१-३२)

BG 3.31: Those who abide by these teachings of Mine, with profound faith and free from envy, are released from the bondage of karma.
BG 3.32: But those who find faults with My teachings, being bereft of knowledge and devoid of discrimination, they disregard these principles and bring about their own ruin.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर् ज्ञानवान् अपि ।
प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति ॥३३॥

प्रश्नः सभी प्राणी अपने स्वभाव-वश ही कर्म करते हैं. ज्ञानी भी अपनी प्रकृति के अनुसार ही कार्य करता है. फिर इन्द्रियों के निग्रह का क्या प्रयोजन है? (३.३३)

BG 3.33: Even wise people act according to their natures, for all living beings are propelled by their natural tendencies. What will one gain by repression?

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ ।
तयोर् न वशम् आगच्छेत् तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ ॥३४॥

उत्तरः प्रत्येक इन्द्रिय के भोग में राग और द्वेष, मनुष्य के कल्याण मार्ग में विघ्न डालने वाले, दो महान् शत्रु रहते हैं. इसलिए मनुष्य को राग और द्वेष के वश में नहीं होना चाहिए. (३.३४)

BG 3.34: The senses naturally experience attachment and aversion to the sense objects, but do not be controlled by them, for they are way-layers and foes.

राग और द्वेष से स्वभाव पर गहरा असर पड़ता है । इसीलिये तो ऋषि और मुनि अपने इन्द्रियों पर काबू रखते हैं ।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठितात् ।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ॥३५॥

अपना गुणरहित सहज और स्वाभाविक कार्य आत्मविकास के लिए दूसरे अच्छे अस्वाभाविक कार्य से श्रेयस्कर है. स्वधर्म कार्य में मरना भी कल्याणकारक है. अस्वाभाविक कार्य हानिकारक होता है. (१८.४७ भी देखें) (३.३५)

BG 3.35: It is far better to perform one's natural prescribed duty, though tinged with faults, than to perform another's prescribed duty, though perfectly. In fact, it is preferable to die in the discharge of one's duty, than to follow the path of another, which is fraught with danger.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

अर्जुन उवाच :
अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः ।
अनिच्छन्न् अपि वार्ष्णेय बलाद् इव नियोजितः ॥३६॥

अर्जुन बोले— हे कृष्ण, न चाहते हुए भी बलपूर्वक बाध्य किए हुए के समान किससे प्रेरित होकर मनुष्य पाप का आचरण करता है? (३.३६)

BG 3.36: Arjun asked: Why is a person impelled to commit sinful acts, even unwillingly, as if by force, O descendent of Vrishni (Krishna)?

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्रीभगवानुवाच :
काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः ।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनम् इह वैरिणम् ॥३७॥

श्रीभगवान बोले— रजो गुण से उत्पन्न यह काम (जड़-पदार्थों के संग्रह की इच्छा, सुख की इच्छा आदि) है, यही क्रोध है, कभी भी पूर्ण नहीं होने वाले इस महापापी काम को ही तुम (अध्यात्मिक मार्ग का) शत्रु जानो. (३.३७)

BG 3.37: The Supreme Lord said: It is lust alone, which is born of contact with the mode of passion, and later transformed into anger. Know this as the sinful, all-devouring enemy in the world.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

धूमेनाव्रियते वह्निर् यथादर्शो मलेन च ।
यथोल्बेनावृतो गर्भस् तथा तेनेदम् आवृतम् ॥३८॥

जैसे धुएं से अग्नि और धूलि से दर्पण ढक जाता है तथा जेर से गर्भ ढका रहता है, वैसे ही काम आत्मज्ञान को ढक देता है. (३.३८)

BG 3.38: Just as a fire is covered by smoke, a mirror is masked by dust, and an embryo is concealed by the womb, similarly one's knowledge
gets shrouded by desire.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

आवृतं ज्ञानम् एतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा ।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च ॥३९॥

हे कौन्तेय (अर्जुन), अग्नि के समान कभी तृप्त न होने वाले, ज्ञानियों के नित्य शत्रु, काम, के द्वारा ज्ञान ढक जाता है. (३.३९)

BG 3.39: The knowledge of even the most discerning gets covered by this perpetual enemy in the form of insatiable desire, which is never satisfied and burns like fire, O son of Kunti.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिर् अस्याधिष्ठानम् उच्यते ।
एतैर् विमोहयत्य् एष ज्ञानम् आवृत्य देहिनम् ॥४०॥

इन्द्रियां, मन और बुद्धि काम के निवास स्थान कहे जाते हैं. यह काम इन्द्रियां, मन और बुद्धि को अपने वश में करके ज्ञान को ढककर मनुष्य को भटका देता है. (३.४०)

BG 3.40: The senses, mind, and intellect are said to be breeding grounds of desire. Through them, it clouds one's knowledge and deludes the embodied soul.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

तस्मात् त्वम् इन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम् ॥४१॥

इसलिए हे अर्जुन, तुम पहले अपनी इन्द्रियों को वश में करके, ज्ञान और विवेक के नाशक इस पापी कामरूपी शत्रु का विनाश करो. (३.४१)

BG 3.41: Therefore, O best of the Bharatas, in the very beginning bring the senses under control and slay this enemy called desire, which is the embodiment of sin and destroys knowledge and realization.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

इन्द्रियाणि पराण्याहुर्, इन्द्रियेभ्यः परं मनः ।
मनसस् तु परा बुद्धिर्, यो बुद्धेः परतस् तु सः ॥४२॥

इन्द्रियां शरीर से श्रेष्ठ कही जाती हैं, इन्द्रियों से परे मन है और मन से परे बुद्धि है और आत्मा बुद्धि से भी अत्यन्त श्रेष्ठ है. (कठो.उ. ३.१० तथा गीता ६.०७-०८ भी देखें) (३.४२).

BG 3.42: The senses are superior to the gross body, and superior to the senses is the mind. Beyond the mind is the intellect, and even beyond the intellect is the soul.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानम् आत्मना ।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम् ॥४३॥

इस प्रकार आत्मा को मन और बुद्धि से श्रेष्ठ जानकर, (सेवा, ध्यान, पूजन आदि से की हुई शुद्ध) बुद्धि द्वारा मन को वश में करके, हे महाबाहो, तुम इस दुर्जय कामरूपी शत्रु का विनाश करो. (कठो.उ. ३.०३-०६ भी देखें) (३.४३)

BG 3.43: Thus knowing the soul to be superior to the material intellect, O mighty armed Arjun, subdue the lower self (senses, mind, and intellect) by the higher self (strength of the soul), and kill this formidable enemy called lust.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

गीता दर्पण का तात्पर्य :-

इस मनुष्यलोक में सभी को निष्कामभाव पूर्वक अपने कर्तव्य का तत्परता से पालन करना चाहिए, चाहे वह ज्ञानी हो या अज्ञानी, चाहे वह भगवान् का औतार ही क्यों न हो ! कारण कि सृष्टिचक्र अपने-अपने कर्तव्य का पालन करने से ही चलता है । मनुष्य न तो कर्मों का आरम्भ किये बिना सिद्धि को प्राप्त होता है और न कर्मों के त्याग से सिद्धि को प्राप्त होता है । ब्रह्माजी ने सृष्टि रचना के समय प्रजा से कहा कि तुम लोग अपने-अपने कर्तव्य कर्म के द्वारा एक दूसरे की सहायता करो,एक दूसरे को उन्नत करो तो तुम लोग परमश्रेय को प्राप्त हो जाओगे । जो सृष्टि चक्र की मर्यादा के अनुसार अपने कर्तव्य का पालन नहीं करता उस का इस संसार में जीना

व्यर्थ है । यदपि मनुष्य रूप में अवतरित भगवान् के लिये इस त्रिलोकि में कोई कर्तव्य नहीं है, फिर भी वे लोक संग्रह के लिये और मनुष्यमात्र के उदाहरण के लिये अपने कर्तव्य का तत्परता से पालन करते हैं ।
ज्ञानी महापुरुष को भी लोकसंग्रह के लिये अपने कर्तव्य का तत्परतरा से पालन करना चाहिये । अपने कर्तव्य का निष्कामभाव पूर्वक पालन करते हुए मनुष्य मर भी जाए, तो भी उस का कल्याण हो जाता है ।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

Gita Essence in English – Chapter 3

In the human world, everyone should perform their duty diligently, whether he is knowledgeable or ignorant, or even if he is an incarnation of God. This is because the cycle of creation continues only by performing one's duties.

Man achieves success neither without starting the work nor by renouncing it.
At the time of creation, Lord Brahma told the humans to help each other by doing their respective duties, elevate each other and you will attain ultimate glory. The one who does not perform his duties as per the limits of Sristi Chakra, his life in this world is meaningless.

Even though God incarnated in human form has no duties in this universe, yet he diligently performs His duties for the sake of folklore and to set example for the mankind. A wise man should also diligently perform his duties for the welfare of the people.
Even if a person dies while performing his duty selflessly, his welfare is achieved.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐतत्सदिति श्रीमद्भगवतगीतासूपरिष्सु ब्रह्मविद्यां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोग नाम ऽध्याय ॥३॥